कृष्ण बहादुर विद्यासागर सतती
एडवोकेटस
विष्णुगंज लश्कर (गवालियर)

पोपप्रदीप

DISHESHWER DYAL
BHASKAR
Bazar

जिस को

श्रीयुत ठाकुर गिरवरसिंह वर्म्मा ने स्वदेश भाषा की मनोहर कविता में अपने देशवासियों के हितार्थ रचा।

तथा

लाला हरस्वरूप जी मवाना (मेरठ) निवासी ने "भास्कर प्रेस" मेरठ में छपवाया।

PRINTED & PUBLISHED BY

R. S. DUBLIS AT THE BHASKAR PRESS,

Meerut City.

मिलने का पताः—

मैनेजर भास्कर प्रेस शहर मेरठ।

सन् १९१२ मूल्य -)॥

चतुर्थ बार १००० प्रति

गुरु विरजानन्द दण्डी
सन्दर्भ पुस्तकालय
प परिग्रहण क्रमांक 4836

भूमिका

यह पुस्तक सब मनुष्यों के हितार्थ स्वदेशभाषा के ललित छन्दों में रची गई है, और इस में चतुवर्णों के वे कर्म वर्णन किये हैं कि जिन के परित्याग से और जिन २ के करने से भारतवर्षनिवासियों की यह दुर्दशा हुई और होती चली जाती है। सब महाशयों से यह प्रार्थना है कि इस पुस्तक को पक्षपातरहित हो कर आद्योपान्त विचार करें, क्योंकि विना आद्योपान्त के विचारे ग्रन्थकार का अभीष्ट और पुस्तक का सारांश ज्ञात नहीं होता। इस पुस्तक में विना पक्षपात के याथातथ्य उल्लेख किया है। इस के चार खण्ड हैं। प्रथम ब्राह्मण पोप खण्ड, द्वितीय क्षत्रियपोपखण्ड, तृतीय वैश्यपोपखण्ड, चतुर्थ वेष-धारी अर्थात् तूंबा पोपखण्ड। प्रत्येक खण्ड में कि जिस वर्ण का खण्ड है उस वर्ण की भूत व वर्तमान दशा अति उत्तम रीति से दर्शाई गई है और साथ ही उस के सुधार के साधन वेद, मनुस्मृत्यनुकूल वर्णन किये गये हैं।

पाठक वृन्द! यदि कहीं किसी प्रकार की अशुद्धता इस पुस्तक में दृष्टिगोचर हो तो उस के लिये मुझे क्षमा कीजिये क्योंकि मैं संस्कृतज्ञ और काव्य का ज्ञाता नहीं हूं और इस लिये मुझे आशा है कि निष्फल तर्क वितर्क न करके केवल इस पुस्तक के आशय पर ही ध्यान देंगे॥

आप का एकहितैषी—

गिरवरसिंह वर्म्मा

ग्राम—चांदोख

ज़िला बुलन्दशहर

ओ३म्

पोपप्रदीप ।

दोहा

चैत्रशुक्लद्वितीयामहिज गुण३ युग४ ग्रह९ शशि१ वर्ष ।
गिरवर सिंह वर्म्मा रच्या पोपप्रदीप सहर्ष ॥

हे सर्वज्ञ अलख अविनाशी तू जल थल में रह्यो समाय ।
हे प्रभु सकल सृष्टि के कर्ता अधर धरे ब्रह्मांड बनाय ॥
निराकार और निर्विकार तू निराधार जाने संसार ।
ओंकार तू अखिल अखण्डित सकल विश्व के पालन हार ॥
अन्तर्यामिन् हे नारायण हे गणपती सृष्टि के ईश ।
परम ब्रह्म तू है परमेश्वर परमात्मन् हे जगदीश ॥
हे शिव विष्णु रुद्र अविनाशी आदि पुरुष तू है भगवन् ।
जगन्नाथ अरु जग के कर्त्ता पवित्रात्मा अति पावन ॥
अजर अमर हे आदि अनूपम विश्वंभर हे विश्वाधार ।
न्यायी दयालू हे अज व्यापी सर्वेश्वर हे सृजन हार ॥

दोहा

सत्य चित्त आनन्द हे हे ईश्वर सुखधाम ।
भारत पर कीजे कृपा कृपासिन्धु तव नाम ॥
भरतखण्ड की मैं दशा पहिले करूं बखान ।
कैसी थी क्योंकर रही कब ते बिगरी आन ॥
अब यह कैसी है गई तिस का करूं बयान ।
जिन कर्मन ते यह भई सुनो ताहि धर ध्यान ॥
गिरवरसिंह वर्म्मा कहै सुनो सुजन मन लाय ।
जिन कर्मन उन्नति रहि तिन बिन बिगरी आय ॥

॰। क्षत्री वैश्य तुम बुरा न मानो कोय ।
॰पात को छोड़ि के कहूं सत्य जो होय ॥

चौपाई

॰म्हरे वंश पोप जो भयेऊ । सबै डुबाय डब पुनि गयेऊ ॥
उन पोपन की कहूं कहानी । क्या क्या करी देश की हानी॥

दोहा

बार बार पूंछू यही मुझे रहा सन्देह ।
पोपराज महाराज ने कब धारी निज देह ॥

चौपाई

कितने दिवस छिपे ये रहेउ । कितने दिन में प्रकटत भयेउ॥
कब ते निज परिवार बढ़ायेउ। कब ते भरत खण्ड बह कायेउ॥
कब ते अटल राज भी इन का । निर्भय धौंसा में दे डंका ॥

दोहा

महाभारत संग्राम ते पहले बरस हज़ार ।
जन्म लियो दब के फिरे रहे बिना व्यौपार ॥
तीस लक्ष मारे गये बहुत शूर सुज्ञान ।
भारत में भारत भयौ प्रगट पोप भये आन ॥

कवित्त

भारत को बिभव सब भारत ही ले गयो
करणा आदि बाणधारी भीष्म पितामह से ।
हाय अभिमन्य सो समर में चलो गयो
राजा दुर्योधन विद्वान द्रोण आदिक से ॥
शल्य भगदन्त वीर यूथ प्राण दे गयो
अन्य देशवासी बहु भूप आनि मारे गये ।
पोप बेलि पुष्ट युद्ध भारत ही कर गयो
विद्या यम नियम धर्म गुप्त भये तब ही ते ॥
भारत को विभव सब भारत ही ले गयो ॥

दोहा

पोपराज हर्षित भये करें निकंटक राज
ज्ञाता बहु भारत हरे बाढ्यौ पोप समाज

चौपाई

कछुक दिवस परिवार बढ़ायौ । निडर होय करिके बहकायौ
कोई आगे ना रह्यौ पिछाड़ी । अटल राज करि कीली गाड़ी ॥
हुल्ड़ मचाय मही पर दीन्हे । एक बार अन्धे करि लीन्हे ॥
पोपराज की फिरी दुहाई । मत अनेक दीन्हे फैलाई ॥

छन्द तोटक

महि में न बच्यो अस देश कहीं । जहां पोपन कीन्ह प्रवेश नहीं ॥
जिन सत्य विचार कुशास्त्र लियो। तिनकी दिश पोपन मुंह नकियो
न कुरानिन ने न किरानिन ने । न सुनो जिन पंथ प्रचारिन ने ॥
तब दुष्टरुम्लेक्ष बताय दिये । तिनही जल मूड़ि पुराणि लिये॥

दोहा

पोपन सब भूगोल ते दूरि कियो मत वेद ।
जिन शिक्षा लीन्ही नह दिये दुष्ट करि खेद ॥

दास करोड़ अठारह कीन्हे । खेदि अरब ते ज्यादा दीन्हे ॥
निज दासन की रक्षा जैसी । करी सम्हारि विदित है तैसी ॥
वरण कर्म चारी के छीने । लक्षण धर्म न रहने दीने ॥
विद्या धर्म न ईश्वर राख्यौ । ईश्वर वाक्य पोप जो भाख्यौ ॥
निज शरीर ईश्वर पुजवाये । घंटा शंख झांझ बजवाये ॥
मंत्र समर्पण तिन को कीना । तन मन धन प्रत्यर्पण लीना ॥
एक कहत सकुचत मन मांहीं । परशादिन को चेली जाहीं ॥
मंत्र यादि इन को नहि भयेऊ । फूंके कान दास करि लयऊ ॥
वाह पोप जी कृपा निकेता । ईश्वर ज्ञान न जीव सचेता ॥
धर्म कर्म ते नहीं कुछ रीती । केवल भोजन ही ते प्रीती ॥
ध्यान ज्ञान बिजया को जानौ । सुलफा हुक्का ईश पहिचानौ ॥

अति बिज्ञानी । अक्षर पढ्यौ न विद्या जानी॥
करि सार निकारा । राम राम इक नाम पुकारा ॥
जिन का महाव.क्य यह है
लिखना बाम्हण का काम । भज भई साधो सीताराम॥

चौपाई

ऐसो इन को दृढ़ विश्वासा । विद्या पढ़ै न अन्य के पासा ॥
अन्य देश कहीं दियो न पाई । गप्पा मिल्यो न प्रीत जमाई॥
सब को करें यहीं उपदेशा । रहै धर्म नहीं गये विदेशा ॥
दास यही के अति मन भाये । लूटि लूटि सब बिधि ते खाये॥

छन्द तोटक

इन के कितने बढ़ि पेट गये । भगवान ही लीलि न तृप्त भये॥
जिन चारहु वेद गिरास किये । उपवेदहु खाय जुंगारि लिये ॥
भाजी षटशास्त्र बनाय लिये । तिन के सटके नहिं कांपे हिये॥
सत्पथादि सबै सद्ग्रन्थ कहे । महाराज की तोंदि समाय रहे॥
सद् विद्यन को पुनि खीर करो। सब पोप समेटि स्वभोंदि भरो॥

दोहा

लड्डू पेड़ा उपनिषद् पूरी ज्यों बेदांग ।
गपकै लीन्ही दक्षिणा भारत गौरव मांग ॥
मनुस्मृती चटनी करी चाटी चट्ट अघाय ।
तोंद फटै इन की दई यज्ञ सुफल हैजाय ॥

श्लोक

भुक्त्वाभुत्कत्त्का तौ यस्य मृत्युं पोपरवाप्नुयात् ।
भवेत्तत्सफलोयज्ञः स्वर्गं पोपः मृतोविशेत् ॥

दोहा

भरतखण्ड को जेंइ के लीन्ही नहीं डकार ।
उदर समुद्र समान करि तिस में लीन्ही डार ॥

चौपाई

बड़ा अनर्थ पोप यह कीन्हा । आपन नाम विप्र ध
वेद कर्म नहीं जानत भयेउ । क्षिदित नाम ब्रह्मण करि
देखो इन्है लाज नहीं आई । ब्राह्मण कुल की हंसी कराई ।
होते जन्म शूद्र सब कोई । संस्कार द्विज उत्तम सोई ।
वेद पठत पर विप्र कहेऊ । चारि वेद पठि ब्राह्मण भयेउ ।
आप पढ़ै अरु सबै पढ़ावैं । यज्ञ करैं पर घर करवावैं ॥
दान लेत अरु देते दाना । ब्राह्मण के षट् कर्म बखाना ॥
जो इन कर्मन ते भी हीनो । ब्राह्मण ताहि न कोई चीन्हों ॥

छन्दगीतिका

महिमा कहूं क्या ऋषि मुनिन की जगत में विख्यात थे ।
जिन के हृदय में वेद चारों सूर्य्य तुल्य प्रकाश थे ॥
जिन वेद भाष्य बनाय करि इतिहास ब्राह्मण रचि दिये ।
जैमिनि कपिल व्यासादि ने षट् शास्त्र हु सब कहि दिये ॥

चौपैयाछन्द

गौतम वात्सायन अरु बोधायन अग्निवेश पुनि पिङ्गल ।
सुश्रुत भागुरि मुनि भरद्वाज मुनि यास्क मुनीश पतञ्जल ॥
भारत के भूषण विद्यापूषण जिन्हीं ते सब भूतल ।
लहि शिक्षा दाना भये विद्वाना अब तिन के सुत सूशल ॥

दोहा

हा ब्रह्मा से कहं गये सनक सनन्दन आदि ।
पोप राज करते नहीं होते कहीं कणादि ॥
जादिन तें सृष्टी रची रह वैदिक मत एक ।
खान पान तिहुं वर्ण में भयो न पंक्ति विवेक ॥

चौपाई

सब भूगोल मध्य विख्याता । भारत वर्ष स्वर्ग सुख दाता ॥
रहे क्षत्री सम्राट यहां के । ब्राह्मण निधि चौदह विद्या के ॥
वैश्य रहे धन धान्य अपारा । करते रहे सत्य व्यवहारा ॥

के मानुष आते। विद्याध्ययन यहीं करि जाते ॥
ग रहें निज धर्मा। विद्या वेद बिचारत धर्मा ॥
पकार परस्पर रहेउ। तन मन देश उन्नती क्येउ ॥
सोई भरतखण्ड अब देखो। पोपन करि दियो कैसो लेखो ॥
छिन्न भिन्न करि भारत डारयो। परदेशिन के मुख में बारयो॥
हाय न इन्हें दया कछु आई। आप डूब सब दिये डुबाई ॥

दोहा

सुनो महाशय पोप जी बिनय करूं कर जोर।
पक्षपात को छोड़ कें उत्तर देहु बहोर ॥

चौपाई

सूर्य्य चन्द्र आदिक ग्रह तारे। सम्बन्धी क्या लगें तुम्हारे ॥
शरीन के बाधक करि दीन्हे। मित्र बनाय आपने लीन्हे ॥
नव ग्रहन की शांति कराई। पशु आदिक धन धान्य छिनाई॥
क्रूर बक्र ह्वै हम पर आवैं। तेल सतनजा तुम्हें दिवावें ॥
चौथ आठ बारहवें आये। निज घर शांत न कभी कराये ॥
औरन के चौरे करि डारे। नव ग्रहा क्या भिड़हा पारे ॥
भैंसा भैंस बकरिया लाओ। बेचि मलेक्ष हाथ कटवाओ ॥
क्या ये हैंगे मांसा हारी। अजी पोप क्यों दशा बिगारी ॥

दोहा

चाहे करन करावनी पशु हत्या जो कोय।
इन पोपन को दान मिसि गाय भैंस दे सोय ॥

चौपाई

विद्याहीनन को डरपायो। क्या ही अनगढ़ जाल बनायो ॥
विद्वानन को धोखा दीन्हो। यह छल नहीं अभी तक चीन्हो ॥

दोहा

सूर्य्यादिक ग्रह लोक हैं पृथ्वी के अनुमान।
जैसी सृष्टी यह बसे तैसी तिन पर जान ॥

चौपाई

ये जड़ राग द्वेष नहिं ज्ञानी । देत न काहू दुख सुख आनी ॥
क्या क्या लीला पोप चलाई । शुक्र बृहस्पति दिये डुबाई ॥
हैं ये दोनों नभ के तारे । इनसे बहुधा काज बिगारे ॥

दोहा

युवा स्त्रिन को कियौ वर्जित आमन जान ।
क्या स्वारथ इसमें सधौ कहिये पोप बखान ॥

चौपाई

है स्वारथ इस में मैं भूला । परधन हरन चलाई लीला ॥
सूक डूब स्त्री घर आवे । उस घर जाय बिराम न खावे ॥
कुछ धनधान्य बिस्तर लें तिससे । रूठे शुक्र होंय खुश जिससे ॥
मृतक समय पंचका बताये । हाय शोक में शोक बढ़ाये ॥

दोहा

एक मृतक के शोक ते हिया विदीरण होइ ।
चार ओर कहे पोप जी सुन तब कस गत सोइ ॥
पुत्र जन्म उत्सव भये हर्षे नर और नार ।
मूल बताकर पोप जी दिये शोक में डार ॥
क्या कहूं पंचका मूलकूं सुनिये पोप दयाल ।
नक्र कहूं या वृक कहूं या कहूं सिंह कराल ॥

चौपाई

मूल पंचका जिन्हें बतावैं । ते नक्षत्र लोक कहलावैं ॥
वे घूमें अपनी परिधी पै । दुख सुख देंय न आइ धरती पै ॥

दोहा

सुनियो सुनियो पोपजी नैन खोल चित लाय ।
सत्य सत्य कह दीजियो पक्षपात बिसराय ॥

चौपाई

पूरी क्यों कबतें करि पक्की । रोटी किहि कारण भई कच्ची ॥
रोटी सकरी छूती होई । क्षत्री वैश्य शूद्र छू कोई ॥
अपने घर में आप बनाओ । चौका बाहर तादिन खाओ ॥
पुत्र स्त्री सकल तुम्हारी । रोटी घर घर करें अहारी ॥
गौ मांस तक छोड़े नाहीं । जीमकर होइ प्रसन्न मनमाहीं ॥
क्या स्त्री पंक्ती में नाहीं । करो विचार सोच मन माहीं ॥
खान पान ते धर्म न जाई । बरजोरी कोऊ देइ खवाई ॥

दोहा

मुसलमान के दूध मय पीवत धर्म न जाय ।
क्या पानी उसमें नहीं देखा ध्यान लगाय ॥
ईसाइन की दवाते गयो न तव ईमान ;
शर्बत आशव आदि ते पीवत हुई न हानि ॥
पंक्ती बाहर करन को बनगये सिंह कराल ।
निज पंक्ती शामिल करन मानो भये शृगाल ॥

चौपाई

इन कर्मन ते यह फल भयेउ । करोड़ अठारह हिन्दू रहेउ ॥
इनहूं में निशदिन घट वारा । बढ़े म्लेछन का परिवारा ॥
नित नित वस्तु घटे जो कोई । उसका अंत होइ फिर होई ॥
दीक्षा जब से तुम्हरी पाई । वैदिक मतको दिया मिटाई ॥
अब तुम सावधान ह्वै जागो । पोपन के धोखे को त्यागो ॥
विनय करैं हम पोप तुम्हारी । त्राहि त्राहि आरत भये भारी ॥
जबते तुमने ज्ञान यह दीन्हा । भारतखण्ड भयो मति हीना ॥
कण्ठी जबते फांसी डारी । गई श्री ह्री धी विद्या सारी ॥
जा दिन ते आचारज भयेउ । भारत विभव उदर धरि लयेउ ॥

सब की आयु कांति तुम खाई। बालविवाह कराय कराई॥
मेटी तुम नियोग विधि जबते। भये अगणित व्यभिचारी तबते॥
गर्भपात हत्या बहु भारी, चढ़त पोप जी नारि तुम्हारी॥
विधवा व्यर्थ आयु निज खोवै। बिन संतति तुम जियको रोवैं॥
नर नारिन हित वेद बखानै। पुनर्विवाह कदापि न ठानै॥
विधवा अरु रंडुवा चहें जोई। नियोग करैं संतति हित सोई॥
पर तुम वेदविरुद्ध अनेका। करत व्याह निज त्यागि विवेका॥
नारिन हृदय बाण यह वेधा। एक विवाह नियोग निषेधा॥

दोहा

भरतखण्ड गयो हाथ से, रहा न धन अरु धान।
वेदधर्म सब लोप भये, जबतें पोप प्रधान॥

चौपाई

भलो तुम्हार पोप नहि भयेउ। अपन हमार नाश करि लयेउ॥
तुम घर घर के बने भिखारी। देव दान हम गऊ तुम्हारी॥
अब तुम कण्ठी वेगि उतारो। समै उलट गयो नेक निहारो॥
कण्ठा तोरि हमन जब डारी। बात कहां फिर रही तुम्हारी॥
दाव तुम्हार लगे अब नाहीं। दया कीन्ह ईश्वर हम माहीं॥

छन्द माधवी

हम देखि बिहाल सभी विधिते अति कीन्ह कृपा जगदीश हरी।
प्रकटे तब स्वामी दयानन्दजी जिन सर्व अविद्याहि नाशकरी॥
पुनि धर्म सुविद्याहि उन्नति दे तमनाशन की चित वाने धरी।
सब जाल कुग्रन्थ बताय दिये तब पोपन की ठगई उघरी॥

दोहा

वेद छिपाये पोप जी, निज स्वारथ के काज।
लीन्हे आय निकाल सब, स्वामी जी महाराज॥

चौपाई

वेद धर्म अब भयो प्रचारी। लीला डूबी पोप तुम्हारी॥

अब तुम सुनो पोप महाराजा । ग्राम नगर बहु भये समाजा॥
अब तुम अन्यदेश को जाओ । बुद्धिहीन जहं मानुष पाओ ॥
यहां रहो तो करो उपाई । तुम्हरे हित मैं देहुं बताई ॥
हाबूड़ा कंजर करि चेला । भील बेड़ियन ते करि मेला ॥
चेला गुरू एक व्है जाओ । नित्य नित्य धन लूटो खावो॥

छन्द गीतिका

शाप दें क्या पोप जी को जसो दुख हमको दियो ।
हे न्यायकारिन् शीघ्र ही यह भोग हीं अपनी कियो ॥
सद् धर्म सब दिये मेटि पापन पोप जाल बनाय के ।
पशुवत् विचारे शिष्य बांधे खूब ही बहकाय के ॥

दोहा

अब हम पूछें पोप जी दीज्यो सत्य बताय ।
यह अनरथ कहं ते गढ्यो वाधो नारि बनाय ॥

छन्द हरिगीत

वेद में नहिं लेख इसका नाहि विद्वानन कही ।
वह वाह वह जी पोप जी विद्या निकाली क्या नयी ॥
भूदेव बनि के आपही भूसुर कहाये भी सही ।
करि विदित सब में इह कथा यक लात विष्णु के दई॥

दोहा

इतने हू पर नहिं कियो कुछ हम पर उन खेद ।
हैं हम ईश्वर से बड़े या में नहीं विभेद ॥
ईश्वर ने आज्ञा दई हम अधिकारी वेद ।
तिहुं वरण को कर दिया पढ़ना वेद निषेद ॥

छन्द हरिगीत

तिहु वरण राखे हीन विद्या वेद नाहिं पढ़ने दिये ।
गये भूलि सब सद् धर्म विद्या दास जब पोपन किये॥

विद्या निषेदी तियन को अरु स्वर्ग का ठेका लिया।
विन दक्षिणा अरु दान लीन्हे कोई नहिं घुसने दिया॥
इस लोक अरु परलोक के मालिक बने हैं पोप जी।
चाहें जिसे दें स्वर्ग अरु चाहे जिसे दें नर्क जी॥
बैकुण्ठ और नर्कादि की सीढ़ी इन्हीं के हाथ में।
नृप परीक्षित अरु नृगादिक के विचारी गाथ में॥

पोपजी महाराज का पद सुनिये

पोपगति अद्भुत सुनिये ज्ञानी। क्या २ कथा गढ़ी मनमानी॥

टेक

लक्ष गौ नित दान जु करते नृग राजा से दानी।
कर करकेंट कूप में डारे पाछे देह बढ़ानी॥
पोपकथा सुन भूप परीक्षित स्वर्ग गये जग जानी।
आप इन्हीं के निराकार ने देह धरी नर आनी॥
पोप गति अद्भुत लखिये ज्ञानी। क्या २ कथा गढ़ी मनमानी॥

चौपाई

गरुड़ पुरान सुना जिन काना। ते माने मम बचन प्रमाना॥
वाकर लेख कहूं अब भाई। सुनो तात थिर व्है चित लाई॥
कहैं पोप जब मरते प्रानी। बांधे तिन्हैं दूत यम आनी॥
उन दूतन के शरीर कैसे। मानो गिरि कज्जल के जैसे॥
यमपुर को ले चलो बहोरी। मारग त्रास देत नहिं थोरी॥
रैन दिवस चलने में आवै। पुर सोलहन में ठहर न पावै॥
शिलागमन पुर इक स्थाना। परैं जीव ऊपर पाषाना॥
वैतरणी नदिया दुखदाई। रुधिर राध की अगम अथाई॥
कांटन का यक मारग आवै। नङ्गे पांव क्लेश बहु पावै॥
परै घोर अतिशय अंधियारा। करें जीव तहं हाहाकारा॥
तृष्णा क्षुधा होय अधिकाई। शीत अरु उष्ण सहे दुखदाई॥

इतने दुख अरु मारग चलना । फिर दूतनका तिन्हैं कुचिलना॥
यह विधि चलत बरष यक लागे । पहुंचे धर्मराज के आगे॥

सोरठा ।

जब तक देय न गाय, पोपराज महराज को ।
तब तक गोता खाय, बैतरणी के बीच में ॥

चौपाई

देय पोप जी को बरषाशन । जूता छाता वस्त्र सिंहासन ॥
तौ भोजन पावे मग माहीं । कण्टक पाथर ते डर नाहीं ॥
घृत और तेल देइ जो कोई । तिमिर नाशतिहिं द्वारा होई॥
षट्रस देय और सतधाना । तौ न देहिं यम गण दुखनाना॥
गज रथ अश्व ऊंट दे कोई । पैदल चले न मारग सोई ॥

दोहा

वृषोत्सर्ग जो कोई करे यथा योग चितधार ।
मृतक स्वर्ग पावै सही कहते पोप पुकार ॥

चौपाई

ऐसी लीला और घनेरी । बरणौ कबलो हैं बहुतेरी ॥
ताते चुप साधी मैं भाई । बुध जानें सब थोरिय गाई ॥
देखो पोपन की चतुराई । ईश्वर को धरि दियो उठाई ॥
आप बने ईश्वर जगमाहीं । सब विधि निडर लूट जग माहीं॥

सोरठा

जो है जग करतार, तासे तो तुम विमुखहौ ।
तुमको यह अधिकार, सत्य कहो कब किन दियौ ॥

चौपाई

मेरे हृदय एक भ्रम भारी । पोपराज तुम देहु निवारी ॥
बैतरणी नद्दी कहं कीनो । गऊ बांधि घर अपने लीन्हो ॥
कब यह तारि मृतक को आई । सत्य कहो तुम्हैं रामदुहाई॥
गिरि समान यमदूत बताये । ते कैसे घर भीतर पाये ॥

दोहा

चिटीं आदि लाखन मरें एक बार बिल माहिं।
तह इतने यम दूत मिलि कहिये कैसे जाहिं॥

चौपाई

शिलागमन पर आदि कहां हैं। निशि दिन पत्थर वरषा जह हैं॥
कंटक मारग अधिक अंधेरी। होय जीव की त्रास घनेरी॥
कहं यम पुरी कहां यम राजा। कहं यमदूत पोप महराजा॥
रौरवादि चौरासी भाखे। नर्क कहो तुम कब्र लखि राखे॥
जूता छाता वस्त्र बहोरी। घृत और तेल लेहु बर जोरी॥
गज रथ अश्व लेहु बहकाई। सुबरण आदिक रत्न छिनाई॥
रुई कपास अरु पात्र बिताना। शय्यादान और बहु दाना॥
हाथ बांधि निर्दय दुखदायी। पितृदण्ड लेते मन भाई॥
पास न होय तो ऋण करवाते। पोप निर्दयी दया न लाते॥
धिक् धिक तुम्हें लाज नहीं आती॥शोकिन ठगत फटत नहीं छाती
करें कुटम्बी मृत हित शोका। तुम हंसि२ के माल हपोका॥
दया धर्म भय ईश्वर त्यागी। बार बार दधि बूरा मांगी॥
मनु धर्म कहु श्रवण हू करते। तो कुछ कुछ ईश्वर से डरते॥

श्लोक

उपासष्टते ये गृहस्था परपाकमबुद्धय:।
तेन ते प्रेत्य पशुतां वृजन्त्यन्नादिदायिनाम्॥

मृतक पास पहुंचे तुम दीये। मारग तोशह फिर किस लीये॥
करे बिदेश गमन जो कोई। खान पान संग लेई न सोई॥
पोपन को नित देइ जिमाई। वृथा भार क्यों संग लेजाई॥

दोहा

पीवे गांजा भङ्ग जो अफीम अरु मद पान।
पोप राज महाराज को खूब पिलावे तान॥
चले जो कोय विदेश को घर अपने कहि जाय।
मेरे बदले पोप को दीजो नित्य जिमाय॥

जो जो मैं भोजन करूं जब जब चित हितलाय ।
तब तब पोपन प्रेम से दीजो वही खवाय ॥
पहुंचा नहीं प्रत्यक्ष में देशान्तर गत पास ।
नित्य जिमाये पोप जी गयौ न एकहु ग्रास ॥

चौपाई

फिर कैसे पहुंचे परलोका । वाह पोप क्या दीन्हा धोखा ॥
शोकातुर जन ठगि ठगि खाये । क्या क्या सुन्दर माल उड़ाये॥
वाही गरुड़ बीच असबानी । मरते जन्म लेत जग जानी ॥

श्लोक

व्रजंस्तिष्ठन्पदैकेन यथैवेकेन गच्छति ।
तथा तृणजलौकैवं देही कर्मानुगोऽवशः ॥

चौपाई

फिरका को यम पकरि बुलावें । दूत मार्ग में त्रास दिखावैं ॥

दोहा

यम मारग में वरष दिन, चला पोप जी कौन ।
सत्य सत्य हम से कहो,साधे बनै न मौन ॥

चौपाई

नहीं यम दूतन कहुं यमराजू । यह सब लीला पोप समाजू॥
शिलागमनपुर आदि न कोई । पत्थर की वरषा जहं होई ॥
बैतरणी नदिया कोऊ नाहीं । जा में प्राणी गोता खाहीं ॥
नहीं मारग कण्टक दुखदाई । जानो पोपजाल यह भाई ॥
रौरव आदिक नर्क बनाये । मिथ्या पोप कपोल बजाये ॥
निज स्वारथ हित रच्यौ उपाई । ठगे सबन यह नाम सुनाई॥

दोहा

गिरवरसिंह वर्म्मा कहै, सुनो सुजन दे कान ।
स्वारथ साधक पोपजी, रचि दिये गरुड़ पुराण ॥

चौपाई

जब से पोपन का भयौ सङ्गा। मति हमार भइ भङ्गम भङ्गा।
जिते पिता से जंगम जङ्गा। मरे पिता पहुंचाये गङ्गा।
जीते पिता की पूछी न बाता। मरे पिता को दालरु भाता॥
जिते पिता की करी न सेवा। मरे पिता को लड्डू मेवा।
कहौ धर्म कब है यह भाई। जो पोपन उर दियौ समाई॥
भला मरे कहुं जैमैं आई। क्यों मति हाट बजार गंवाई॥
धर्म कर्म अब कहूं बुझाई। मिले स्वर्ग उपजे सुख भाई।
मात पिता प्रत्यक्ष हैं देवा। सब विधि करै लाय चित सेवा॥
जो प्रसन्न ह्वै दीन्ह अशीशा। देइ स्वर्ग हमको जगदीशा॥

छन्द तोटक

धन्य धन्य वही जग धन्य भये। जिनके पितु मातु प्रसन्नभये॥
कर तर्पण जीवत तृप्त किये। सुख श्राद्धहि कै करिश्राद्ध दिये॥
कबहू नहिं शाशन भंग कियो। सब भांतिन पूजि अनंददियो
जिन पितृन की सुअशीश लही। सत संतति है जगमांझवही॥
कब शर्मजिभीषमहु राम भये। जग में निज कीरति छांड़िगये
सुख पितृन कानदियौ जिनने। जग व्यर्थहि जन्म लियो तिनने।

दोहा

मात पिता आचार्य्य चौथे अतिथी जान।
यही देव पूजा कही करिये नित सन्मान॥
जीवत की तृप्ति करौ वृथा मरिन को दान।
जन्म कहां कब ह्वै गयौ सके न कोई जान॥
जब तक या संसार में जन्म लियौ नहिं आन।
जगत प्रबन्धक ने रच्यौ प्रथमहिं भोजन पान॥
फिर कहिये क्यों कर सको भेज अन्न जलदान।
या धोखे से पोपजी उदर पोषते तान॥

दान पुण्य इस कथन से करता नहीं निषेद।
अधिकारिन को दीजिये बिन कीने मन खेद॥

छन्द हरिगीत

क्या क्या कथा कहूं पोपजी मुझ से नहिं जाती कही।
नहिं होते काग भुशुण्ड कौआ शेष सर्प कही सही॥
मेरी बिनय कब योग्य इन के पोपराज प्रवीणही।
इन की समझ है अति बड़ी मेरे निवेदन हीन हैं॥
माने तो जब ये विनय मेरी ये तो न्याय विहीन हैं॥
कहैं तुलसीदास कवी यही खग समझें खग के बैन हैं॥

दोहा

धन्य धन्य हैं पोपजी धन्य तुम्हें शत वार।
सप्त दीप से आनि कर लियो यहां अवतार॥

चौपाई

कुटुम सहित जब ते तुम आये। पहिले चारों वेद छिपाये॥
फिर ईश्वर के पीछे धाये। बहुतक जाल ग्रन्थ बनाये॥
धन्य धन्य ये ग्रन्थ तुम्हारे। जिनमें ईश्वर न्यारे न्यारे॥
ईश्वर निराकार अज न्यायी। जन्म मरण दियौ ताहि लगाई॥
मिथ्या मत अनेक करि जारी। मूरत पूजा खूब प्रचारी॥
चामुण्डा देवी अरु ज्वाला। ललिता मात सेढू लाला॥
चण्डी काली भैरव आठा। चौंसठि योगिनि को ठठठाठा॥
छप्पन कलुआ बावन बीरा। नरसिंह बन खण्डी रणधीरा।
दश दिग्पाल द्वार रखवारे। दही मास के खाने हारे॥
क्षेत्रपाल सह दुर्गा माता। मद्य मांस से नहीं अघाता॥
हनूमान अरु भूत बुलावा। शंखिनी डंकिनि बूढ़ी बाबा॥
सत्ता और अऊत बुलाये। मरे भये बालक पुजवाये॥
क्षत्री एक बुन्देल मनायौ। नगरसेन धोबी मन भायौ॥
लांगुरबीर किये अगवानी। आनि चमारी-लोना मानी॥

एक मसानि मसाल बलायौ । बकरा काटि कलेज चढ़ायौ ॥
अङ्गी संग जखैया आयौ । सूअर काटि के लोहू न्हायौ ॥
भैंसा बकरा जीव बिचारे । बलदानन में जाते मारे ॥
नद्दी नाले कुआ पुजाये । तीरथ पोखर ग्राम बनाये ॥
श्वान वृक्ष गर्दभ नहीं छोरे । कंकर पत्थर धातु बटोरे ॥
करूं कहां तक अधिक बड़ाई । जूता घूरे दिये पुजाई ॥
इतने हू पर नाहिं अघाये । मुसलमान मुर्दे मनवाये ॥
शेखसद्दो अरु सरबर पीरा । ख्वाजा शाह मदारहु मीरा ॥
ज़ाहर के डौंरू बजवाये । बकरा मुर्गा बहुत कटाये ॥

दोहा

कंस पोपजी ह्वै गये, दया धर्म को छांड़ ।
हाय राम कैसी भई, किस की पकड़ें आड़ ॥
हे अन्धन की लाकड़ी, तुम्ही पोप महाराज ।
कृपा तुम्हारी से हमन, यह दिन देख्यौ आज ।

छप्पै

हत्या को यह तकें तकें यह तेरहीं आसा ।
गरुड़ कथा को तकें मरे यजमान जु खासा ॥
घरसौंड़ी यह तकें दान मन इच्छा पावें ।
रोगी को यह तकें खाट में परौ लखावें ॥
वह ससके यह दान लें मन में करें न ताप ।
पञ्चो न्याय बिचारियो पुण्य भयौ या पाप ॥

दोहा

ईश्वर से बिनती करूं सुनिये दीन दयाल ।
अब तुम शीघ्र बचावहू पोपजाल यमजाल ॥

चौपाई

हे तुम बिनय सुनौ करतारा । तुम बिन कोई नहीं हमारा ॥
जो जो कर्म किये हम स्वामी । परवश ह्वै पोपन अनुगामी ॥

कटक पोपजी का अति भारी । स्वारथ फांस बांधे नरनारी॥
कोई कार्य करन न पावें । जब तक पोपाज्ञा ना पावें ॥
इति ब्राह्मणपोपखण्डः सम्पूर्णः

दोहा

क्षत्रिन की लीला कहूं सो पर कही न जाय ।
यथा बुद्धि वरणन करूं सुनो सुजन मन लाय ॥

चौपाई

क्षत्री अब प्रसन्न ह्वै गयेऊ । दोष सकल पोपन सिर दयेऊ ॥
पोप अकेले करि क्या सकते । जो तुम पोप दास नहिं बनते॥
हे क्षत्री निज हृदय बिचारौ । कहि बिधि डूब्यौ राज तुम्हारौ॥
सत्य धर्म के तुम रखवारे । सब दिन पुरुषा रहे तुम्हारे ॥
जब जब भई धर्म में हानी । रक्षा तबहि करी तुम आनी ॥
भरत सगर देखौ अति भोरे । बिना दण्ड निज पुत्र न छोरे॥
दशरथ देवन समर जितायौ । प्राण तजे पर प्रण न गमायौ॥
देखो रामचन्द्र रघुराई । पितु अज्ञा बन गये हरषाई ॥
देखो भीष्म शूर विद्वाना । शरशय्या पर शांति बखाना ॥
कृष्णचन्द्र बल बुद्धि निधाना । जिनकर सुयश विदित जगजाना
लखौ पराक्रम अर्जुन माहीं । बेध्यौ मीन देखि परिछाहीं ॥

दोहा

सुतन बधे पर कियक्षमा अश्वत्थामा संग ।
शर पंजर को आदि दै किये बहुत रणरंग ॥
गन्धर्वन को जीति रण युद्ध इन्द्र से कीन्ह ।
शिव जीते संग्राम करि पशुपतास्त्र तिहि लीन्ह ॥

चौपाई

लखौ भुपाल करण से दानी । अद्यावधि जिहि कीर्त्ति बखानी
भूप विक्रमादित्य भयेउ । पर उपकार सदा चित दयेउ ॥

दोहा

इहु गुण ग्राहक भोज नृप, जासु राज सब जाति ।
बोलैं भाषा संस्कृत विद्योन्नति दिन राति ॥

कवित्त

भूप सुद्युम्न भूरिद्युम्न इन्द्रद्युम्न भये प्रथित यौवनाश्व अंबरी-
श शशबिंद से। मरुत अनरण्यकुबलयाश्वभूपाल अक्ष सेनहुल-
नक्ष त्रौययात हरिचंद से ॥ स्वायम्भू वास्वपति भरत सर्याति
आदि सार्वभौम केवल नृप भये क्षत्रबिंदुसे । जगत की रचना
हि समर महाभारत लौं आर्य्यसन्तान कीन्ही नृपता स्वछन्द से ॥

दोहा

चक्रवर्ति राजा रहे, सर्व भूमि वश कीन्ह ।
सप्तद्वीप नव खण्ड के मण्डलीक आधीन ॥

चौपाई

क्या तुम उनकी संतति नाहीं । करौ विचार शोच मन माहीं॥
राम कृष्ण सन्तान कहाओ । क्यों उन के गुण हृदय न लाओ॥
अब ईश्वर आज्ञा नहिं मानौ । अपनेहु वरण कर्म नहिं जानौ॥

दोहा

रक्षा करिये प्रजा की अधिकारिन को दान ।
यज्ञ करो विद्या पढ़ो जित इन्द्रियता जान ॥
पंच कर्म क्षत्रीन के मनु ने करे बखान ।
जो इन कर्मन को तजे सो नहिं क्षत्री मान ॥
ब्राह्मण सम है संस्कृत यथा न्याय युत धर्म ।
सोई क्षत्री करि सकैं प्रजा प्रपालन कर्म ॥
रक्षा के कीन्हे बिना कर आदिक जो लेइ ।
मानौ सब संसार का मलसंग्रह करिलेय ॥
बिन रक्षा प्रति भाग बलि दण्ड शुल्क,कर जोइ ।
लेवे यदि तो भूप को बास नर्क में होइ ॥

छन्द तोटक

जिन धर्म सुसंचित अर्थ कियौ । पर द्रव्य न चित्त कदापि दियौ॥
सब ऊपर अर्थहि शौच कहें । मृतिका जल से नहिं शुद्धि लहें॥
जिन अर्थ पवित्र कियो है नहीं । जल न्हाय पवित्र भयौ सु कहीं॥
जब ते यह धर्म सुपंथ तजी । प्रभुता इनकी तबही ते भजी॥

चौपाई

ब्राह्मण को तप जानौ ज्ञाना । क्षत्रिन को तप रक्षा जाना॥
वैश्यन को तप है व्यौपारा । शूद्रन को सेवा तप भारा॥
ये तप अति उत्तम सुखदानी । करहिं वरण निज कर्महिं जानी॥

छन्दगीतिका

क्षत्रीन को धन धर्म हित कौड़ी न अधरम में परै।
व्यय जगत के उपकार में करि देश की उन्नति करैं॥
आपौ बिचारैं देखिके क्या क्या न कौतक करि रहे।
बिन शत्रु के मारे अजो आपस में लड़कर मर रहे॥

चौपाई

दृग भरि भरि रोया मैं भारी । क्षत्रिहु बनि गये पोप अनारी॥
विद्या देखि डरैं यह कैसे । मानौ शिर काटे कोई जैसे॥
आप पढ़े नहीं पुत्र पढ़ाये । मूरख के मूरख कहलाये॥
जो यह जानकार ह्वै जाते । पोपन से धोखा नाहिं खाते॥
हाय इन्होंने कैसी कीन्ही । सरबस फूंकि राज धन दीन्ही॥
धन शरीर वैश्यन ने खाये । मदिरा मास परम मन भाये॥
रंडुअन की तानें अति प्यारी । धर्म अर्थ सब दिये बिगारी॥
निज शरीर निर्बल करि डारे । शस्त्र भार नहीं जाहिं सम्हारे॥
अस्त्र शस्त्र विद्या भई फीकी । अक्ष चालि प्यारी अति जी की॥
शूर बीरतादिक गुण त्यागे । बाल विवाह परम प्रिय लागे॥
व्यसन अठारहु एक न छोड़ा । याते परदेशिन मुख मोड़ा॥
जौ धर्म दश लक्षण वारौ । जा के जाते भयौ अंधियारौ॥

दोहा

करि अधर्म से मित्रता, दिये नियम यम त्यागि ।
हाय हाय निज हाथ से, फोड़ा अपना भाग ।

सोरठा

नहीं व्यय लब्धि बिचारि हानि लाभ देखें नहीं ।
व्यय करि डारैं चारि यदपि लब्धि है एक की ॥

चौपाई

ऋण करते नहिं जिय घबरानौ । अर्थ शत्रु इन को पहिचानौ॥
निज पती से नहीं अघाते । पर त्रियन से नेह लगाते ॥

इन की प्रतिष्ठा का पद

कहत कबीर सुनो बन खण्डी । कीर्ति चहौ तो राखो रण्डी॥
सो कुल धम पंच करि भाखें । जिन के कुल सब वेश्या राखें॥
ये क्षत्री निन्दित हैं सब से । राम न पालौ डारे इन से ॥
जहां कहीं रंचक बल पावैं । बृक समान सब प्रजहि सतावें॥
ऐसे कर्म किये भयौ नाशा । रही न कछु उन्नति की आशा ॥
क्षत्रिन बात बिगारी ऐसी । हरे राम अब होगी कैसी ॥

छन्द तोटक

हिय भूंठ प्रशंसित ह्वै हरषें । नहिं स[illegible] नै परखें ॥
सत धर्म सुविद्याहि नाहि सुनें । कबि डोम कलारन मित्र गिनें॥
कर्त्ता कृत वेदहि मानें नहीं । मन भावत पोप पुराण कहीं ॥
परमेश्वर से नहिं प्रीति करी । जड़ मूरत चित्त अनित्य धरी॥
इन कर्मन ते छिनि राज्य गयौ । नहिं ईश्वर न्याय असत्य भयौ॥

दोहा

धर्म करेते होय जय पाप किये क्षय होय ।
ईश्वर की आज्ञा यही सुनि लीजो सब कोय ॥
इन के डर ते बरण सब करते निज २ कर्म ।
अब यह मूरख बनिगये त्यागि सकल सत धर्म॥

छन्द तोटक

इनके सुधरे सब धर्म गहें । बिगड़े इनके नहिं ठीक रहे ॥
अबहू बरतें धरि धर्म मनें । सब कारज पूर्व समान बनें ॥
जबलों ये भार उठाव नहीं । सुधरें तबलों सत धर्म कहीं ॥
अब होउ सचेत अबेर भई । इतने सुख सोये न नींद गई ॥
यदि शेष नहीं कछु और रही । प्रभु आस न तद्यपि छांडोसही

दोहा

धर्म कर्म निज ग्रहण करि देहु अधर्म बिसार ।
ध्यान करो कर्त्तार को तजो दुष्ट ब्यवहार ॥

इति क्षत्री पोपखण्डःसम्पूर्णः ॥

दोहा

दूरिहि ते रहे वैश्य जी लीला पोप निहारि ।
योगी योगी लड़ि मरे खप्पर फौड़ौ डारि ॥
ब्राह्मण क्षत्री पोप बनि भारत दियो डुबाय ॥
बड़े पोप [illegible] हैं बड़े लीन्ह हमें बहकाय ॥

चौपाई

अजी वैश्य तुम चित्त कहां है । बुद्धिमान कहिं धोखा खा हैं ॥
विद्या बुद्धि सुकर्म गमाये । बड़े पोप ने दास बनाये ॥
हे वैश्यो तनि तुमहु विचारो । किमि भयो सब धन नष्ट तुम्हारो
संचय करि धन धान्य सदाई । करते आपत् काल सहाई ॥
तुम [illegible] थे सबके भण्डारी । क्या अब गति यह भई तुम्हारी ॥
अर्ब खर्ब धन रह तुम पासा । अब नाहिं दीखत लाख पचासा ॥
इतनी सुनि लाला जी बोले । भाई कीं सूं हैं हम भोले ॥
परदेशिन लूटे हमें आई । कछु धन आसामी गई खाई ॥
कारज बडे बड़े करि डारे । मा भाई परलोक सिधारे ॥

रहा सहा धन लगि गयौ वामें। अब हम काको दोष लगावें॥
विधिको लिखी भई सब सांची । परालब्धि किनही नाबांची
बालक थे जब हमें बतायौ । भाई जी ने ज्ञान सिखायौ॥

दोहा

लेखा लिखे ललाट के छठी रात के अङ्क ।
माशौ घटे न तिल बढ़ै रहुरे जीव निशंक ॥
वाह वाह जी वैश्य जी तुम पोपन के पोप ।
अपने कर्म कुकर्म सब ब्रह्मा पै दिये थोप ॥

चौपाई

यह बातें नहिं सत्य तुम्हारी । देखो अपने कर्म बिचारी ॥
तुम ईश्वर आज्ञा नहिं मानी । ताते भये सकल दुखखानी॥

दोहा

रक्षा करिये पशुन की दान यज्ञ चित धार ।
वेद सत्य विद्या पढ़ौ धर्म युक्त व्यौपार ॥

चौपाई

सूद लेहु अरु खेती जानौ । वैश्य कर्म सातौं पहचानौ ॥
दिये कर्म ये जिसने खोई । उसको वैश्य कही नहीं कोई ॥
नहीं अधिक दूने ते लीना । सूद सूद प वर्जित कीन्हा ॥
जो बस्तू बर्तौ धरि गहना । तापर सूद कदापि न लहना ॥

दोहा

सवा रूपिया तक सही अधिक अधिक में पाप
न्यून न्यून में पुण्य है मनु विचारौ आप ॥
सूद अधिक नहिं नियम ते नहि दीजो कमि भाय ।
मुख्य कर्म ये वैश्य के कहे मनू भगवान ।
जा दिन ते वैश्यन तजे अवनति घेरे आन ॥

चौपाई

ऐसे कर्म किये धन धाना । कुल वृद्धी अरु सम्पति नाना ॥

आज काल वैश्यन के कर्मा । धन संग्रह जानें निज धर्मा ॥
रूपया के दें बारह आने । नौ के सौ में नहिं अघाने ॥
निज दुकान चौंतरी बनावें । महादेव को थरौ बतावें ॥
जिस पर बैठ कहें ये बानी । सुनौ सब मिल सज्जन ज्ञानी ॥
जानतेरेवाणिया पहचानतेरेचोर । एकरके तीन करेंगे नारचाहेछोड़ ॥

छन्द हरिगीत

किये बाल ब्याह विचार के गण वर्ग सबहि मिलाय के ॥
लड़िकान से लड़िकी बड़ी क्या बिधि मिली है आन के ॥
लाला हुये राजी महा ऐसी बहू को देखि के ॥
गये सूख वर के प्राण धातू दग्ध है गये पेखि के ॥
सन्तान के शत्रू बने धातू नहीं पकने दिये ॥
क्या बुद्धि पर पत्थर पड़े निज हाथ से निर्बल किये ॥
जग हानि कारक हेतु यह लालाहिके घरसे चला ॥
देखा देखी इनके अब लों पालि यह बहुतन बला ॥
जिन ब्रह्मचर्य उठाय दीन्हो क्रांति अरु शोभा लई ॥
निर्बल किये सब देशवासी क्यों दई कैसी भई ॥

गुरु विरजानन्द स्मारक
सन्दर्भ पुस्तकालय
परिग्रहण क्रमांक 4836
आनन्द महिला

दोहा

दोई देवता पूजि के सत्ती ऊत मनाय ।
दोनों इक ठौरे किये मति पोती व्है जाय ॥

चौपाई

बड़ी बहू पावे बड़भागी । छोटी से सब कुटुम अभागी ॥
लालाजी की निरखौ छाती । अपने आप बने कुलघाती ॥
ऐसे कर्मन ते दुख भोगा । धातु क्षीण आदिक बहु रोगा ॥
होय नपुंसक बूढ़ी मेदा । अति दुर्बल इन्द्रिन ते खेदा ॥
देखौ वैश्यन की चतुराई । क्याही अपनी धूलि उड़ाई ॥
विद्या जिनकी गिनती एका । होय कहांते इन्हें विवेका ॥

तीनों वर्ण करें जब ऐसे। भारत की उन्नति फिरि कैसे॥
कर्म एक शूद्रन का भाई। करें द्विजातिन की सिवकाई॥

दोहा

समाचार नहिं शूद्र के, बर्णन कीन्ह विशेषि॥
तिहु वरण की प्रेरणा, मान चलें अन देखि॥

इति वैश्यपोपखण्डः सम्पूर्णः॥

चौपाई

तोंवा पोप महा शठ भारी। बर्णाश्रम की रीति बिगारी॥
अज्ञ पुरुष बालक बहकाये। मूंडि मूंडि निज शिष्य बनाये॥
शुभगुण आदिक विद्या त्यागी। विषयाशक्त भये बैरागी॥
निज निज पंथ चलाये न्यारे। ईश्वर मन माने गढ़ि डारे॥
धरे अनेक ईश के नामा। नरसिंह ठाकुर शालिग्रामा॥
भीख मांगि कर भोग लगावें। ठाकुर जी को नाम डुबावें॥
मुक्ति मार्ग अनगिनत बनाये। जो जो इन के मन में भाये॥
किनही चरणामृतहि बतायौ। जड़ मूरति को धोवन प्यायौ॥

दोहा

या जग में द्वै दुष्ट हैं, बैरागी अरु ऊंट।
उन तुलसी मुण्डी करी, उन पीपल तरु ठूंट॥

चौपाई

जिनके बन सागर गिरि नामा। क्यों न होंहिं शुभ गुणके धामा॥
भस्म त्रिपुण्ड अक्ष को धारण। दियौ बताय मुक्ति को कारण॥
बेल बृक्ष पर पड़ी तबाही। पत्ता एक न देत दिखाई॥
तोरि तोरि के पत्र मंगाये। ब्यर्थहिं लिङ्गन पर चढ़वाये॥
बक बिडाल वंचक गहि कर्मा। त्यागे योग नियम यम धर्मा॥
सावित्री गुरु मंत्र नशायौ। नमश्शिवाय शिवाय सिखायौ॥

देखौ सब विषयन के भोगी । सुन्दर नाम धरौ निज योगी॥
वेदान्ती जी सब के बावा । ईश्वर बनि ठगि पर धन खावा॥
बनें अकर्त्ता कर्मन करि के । सब कुछ करें ईश सिर धरिके॥

इन का क्या ही सुन्दर वाक्य यह है–

दोहा

जो कीयो सौ तू कियौ, मैं कुछ कीयौ नाहिं ।
जौ कुछ जब मैंने कियौ, क्या नहिं तू मो माहिं ॥

धामिन की क्या करूं बड़ाई । व्यभिचार को दियौ बढ़ाई ॥
बिषयभोग आदिक की पूजा । वा सम मुक्ति उपाय न दूजा ॥

दोहा

मास १ मौन २ मुद्रा हु ३ मद ४ मैथुन ५ पंचमकार ।
पातक नाशन मुक्तिदा बोलौ करण विचार ॥
करी कथा तिन की विदित जे वर्णाश्रम पोप ।
भारत आरत करि जिनन कियौ बिभव सब लोप ॥

इति तोंवापोपखण्डः सम्पूर्णः ।

छन्द माधवी

तुम हे जगदीश क्षमा करि के करुणानिधि चित्त दया धरियौ ॥
बहु भोगि लई अपनी करणी अब दीन विचारि कृपा करियौ ॥
तुम्हरे बिसरे सिगरी बिगरी अब नाथ कुबुद्धि सबै हरियौ॥
सुनि दीनदयाल निवेदन को सत ज्ञान स ँ हम में भरियौ ॥

दोहा

जब ते तुम को त्यागि के, पूजे हम पाषान ।
मतिकटिपत्थर बनिगये, चाहे गढ़ौ सु आन ॥

चौपाई

चाहे सो नाम हमारौ राखौ । डेम फूल हिन्दू करि भाषौ ॥
भरत खंड से हिन्दुस्ताना । बृटिश ने इन्डिया बखाना ॥

बुत परस्त काफिरहु कहाये। हाय हाय क्या नाम धराये ॥
कहें सभी यह भूतल माहीं। सत्य धर्म भारत में नाहीं ॥
ईश्वर कृत पुस्तक नहिं कोई। निज २ मन मत पर सब कोई॥
आचारज अगणित बहुतेरे। निज २ पंथ चलाय घनेरे ॥
रचे ग्रंथ निज रुचि अनुरूपा। कुमती पड़े कुमति के कूपा ॥
हैं असंख्य मत गिने न जाहीं। परखन सत्य कठिन इन माहीं ॥

छन्द तोटक

जबते हम वैदिक कर्म तजे। हरि त्यागि दिये जड़ जीव भजे॥
तबतें सुख सम्पति छांड़ि हमें। गइ वास कियौ परदेशन में ॥
किहु पूंछी न बात न मान कियौ। सठ अहिमक फूल बतायदियौ
कछु वेगति में हम हीं न रहे। प्रभु त्यागि कहौ सुख कौन लहे॥
बिमुखी हरि ते जब कोई भयौ। तिहिको तुरतै तब नाश गयौ॥

दोहा

हरि रूठे रूठें सबै, सब जग बैरी होय।
कृपा दृष्टि देखें जबहि, दास बनें सब कोय ॥

अब तुम सुनियौ भारतवासी। ईश्वर निराकार अबिनासी॥
जगत पिता जग पालन हारौ। अंतर्यामिन ताहि निहारौ ॥
परमेश्वर से ध्यान लगाऔ। धर्म नियम यम उर में लाऔ॥
पूर्व अवस्था अपनी पाऔ। निश्चय करि शान्ती उर लाऔ॥

दोहा

कर्म ग्रहण निज २ करौ, ईश्वर आज्ञा मान।
तजौ दुखद व्यवहार सब, देउ गई को जान ॥
रही अबहु कछु राखिये, धृति हृदय में धार।
सब दिन रहें न एक से, फिरत न लागे वार ॥
सदा न काहू की रही, प्रीतम के गलबांह।
ढुरती फिरती यों गई, ज्यों तरुवर की छांह ॥

छन्द सवैया

पांडव द्रोपदिजानिकिराम सुकंठ विभिषण की कठनाई ॥
ज्यों प्रहलादन लौ बसुदेव लखौ हरिचन्दहु की बिपताई ॥
धैर्य धरो उर में जिन ने कटि संकट फेरि मिली प्रभुताई ॥
जासुहियेधृतिबासकरेतहं ते भजि आपत जाति खिस्याई ॥
सुनियेकरतारपुकारतुही अबतो चहुओरन आनि बनी है ॥
असकौन बिनयकरिये जिस की प्रभु आप सिवायनआनधनीहै
नमबारन देर करौ बहबेर अबेर की बेर रहीं न घनी है ॥
अब कर्म हमारिन ना लिखिये बहु भोगि लई अपनी करनी है ॥
दीन दयालु सुने जबते त ते मन निश्चय आनि बसी है ॥
औरन आश्रय छांडि निरञ्जन तो शरणागत फेंट कसी है ॥
तोहि बिसारि कहो कहं जाइये मोहि बताइये कौन जसी है ॥
है जगदीश्वर दास पुकारि सुनो नतु होति हमारि हंसी है ॥

दोहा

रघुवंशी क्षत्री विदित, गिरिवरसिंह मम नाम ।
बुलन्दशहर के ज़िला में, है चांदौख सुठाम ॥

ओ३म् शान्तिश्शान्तिश्शान्तिः ॥

इति रघुवंशोद्भव गिरवरसिंह वर्म्मणा विरचिता
पोपप्रदीपिका संपूर्णा
दयानन्दी शकाब्दे ४
तदनुसारेण
वैक्रमीये शकाब्दे
सं० १९४६

आवश्यक सूचना ।

यह पुस्तक हमने ग्रन्थकार की आज्ञा लेकर मुद्रित तथा प्रकाशित किया है तदर्थ हम उक्त महोदय के कृतज्ञ हैं । सहृदय पाठकों से हमारा सानुनय निवेदन है कि वे पुस्तक को आद्योपान्त पढ़ने का श्रम करें और ग्रन्थकार के परिश्रम को फलीभूत होने दें ॥

हमारे यहां आर्य्यधर्म्मसम्बन्धी सब प्रकार की पुस्तकें विक्रयार्थ उपस्थित रहती हैं । आर्यभाषाप्रेमी मंगाकर देखें । कुछ पुस्तकों की तालिका नीचे दी जाती है:-

१- दयानन्दचरित मूल्य १॥) २- सीताचरित्र नाविल पाचों भाग १॥=) ३- नारीधर्म विचार प्रथम भाग ॥) द्वितीय भाग १) ४- गृहस्थाश्रम १।) ५- आर्यभजन संग्रह प्रथम भाग ।-) ६- भारतमयस्वप्न ≡) ७-आर्यसमाज क्या है ।=) ८- सुभाषितरत्नमाला १=) ९- व्याख्यानपञ्चक ।॥) १०- उपनिषद्भाष्य पं० बदरीदत्त कृत १) ११- आर्यगायन =)॥ १२- उपदेशमंजरी ॥) १३- गीताभाष्य श्री पं० तुलसीराम कृत ॥=) १४- न्यायदर्शनभाष्य ॥) १५- योगदर्शनभाष्य ॥) १६- सांख्यदर्शनभाष्य १) १७- वैशेषिकदर्शन भाष्य १) अन्य भी अनेक प्रकार के उत्तमोत्तम ग्रन्थ मिल सकते हैं । बड़ा सूचीपत्र मंगाकर देखिये :-

मिलने का पता:-

[भा]स्कर प्रेस,

मेरठ शहर ।

गुरु विरजानन्द दण्डी
[आर्ष] पुस्तकालय
5836